

## व्याकरण

## संज्ञा

नाम संज्ञा होइत अछि खाहे ओ नाम व्यक्ति, स्थान, वस्तु, गुण, भाव, द्रव्य अथवा समूह आदि ककरो किएक ने होउक।

जेना-माधव, मानव, भारत, घी, लाली, झुण्ड।

व्युत्पत्तिक आधार पर संज्ञाक तीन भेद होइछ-(1) रूढ़ि (2) यौगिक (3) योगरूढ़ि

**रूढ़ि**-रूढ़ि ओ संज्ञा पद थिक जकरा खण्ड कयलासँ ओकर कोनो अर्थ नहि निकलय। जेना-हाथी-हा+थी, हाथीसँ एक पशुक बोध होइछ मुदा हा आओर थी अलग-अलग होइते कोनो अर्थ नहि बतबैत अछि। तँ हाथी शब्द रूढ़ि संज्ञा भेल एहिना दोसर उदाहरण थिक-घर, पानि आदि।

**यौगिक**-यौगिक संज्ञा ओ संज्ञा पद थिक जकर खण्ड सार्थक हो, जेना-पाठशाला दू शब्द पाठ+शालासँ बनल जकर दुनू शब्दक अर्थ होइछ- पाठसँ विषय आ शालासँ घरक अर्थ होइछ अर्थात्-पाठ+शाला दुनू खण्डक अर्थ होइछ तँ पाठशालामे दुनू खण्ड सार्थक अछि। एहिना पुस्तकालय, वाचनालय आदि शब्द यौगिक संज्ञाक उदाहरण थिक।

**योगरूढ़ि**-योगरूढ़ि संज्ञा ओ संज्ञापद थिक जकर खण्ड सार्थक होअय आ पूर्ण शब्दसँ किछु विशेष अर्थ सेहो होइक जेना-पिताम्बर- पीत+अम्बर, पीतक अर्थ होइछ पीयर आ अम्बरक अर्थ-वस्त्र, अर्थात् पीयर वस्त्र मुदा विशेषार्थ होइछ विष्णुसँ। एहिना पंकज, घनश्याम आदि।

जातिक आधार पर संज्ञा पाँच प्रकारक होतइ अछि- 1. व्यक्ति वाचक, 2. जाति वाचक, 3. समूह वाचक,

4. द्रव्यवाचक, 5. भाववाचक

01. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**-जाहि संज्ञा शब्दसँ व्यक्ति अथवा वस्तु विशेषक बोध (ज्ञान) होइत अछि से भेल व्यक्तिवाचक संज्ञा। जेना-गोनू झा, विद्यापति, गंगा, हिमालय, दरभंगा, मिथिला, कमला, पंकज, मोहन, गोबिन्द, राम, श्याम आदि।
02. **जातिवाचक संज्ञा**-ओ संज्ञा शब्द जाहिसँ जातिभरिक बोध होइत अछि से भेल जातिवाचक संज्ञा। जेना-मनुख, नेना, गाम, पहाड़, नदी, शहर, देश, गाम, जंगल, पोथी, विद्यालय, बटुक, छात्र, महिला आदि।
03. **समूहवाचक संज्ञा**-जाहि संज्ञा शब्दसँ व्यक्ति अथवा वस्तुक समूह (झुण्ड) क बोध होइत अछि से भेल समूहवाचक संज्ञा। जेना-कक्षा, सभा, गुच्छा, झब्बा, झुण्ड, घौद, हत्था, जत्था, सेना आदि।
04. **द्रव्यवाचक संज्ञा**-ओ संज्ञा शब्द जाहिसँ एहन वस्तुक बोध होइत अछि जकरा नापल अथवा जोखल जाय से भेल द्रव्यवाचक संज्ञा। जेना-दूध, पानि, घी, दही, चीनी, चाउर, गहूम, तेल, सुपारी आदि।
05. **भाववाचक संज्ञा**-जाहि संज्ञा शब्दसँ एहन अर्थक बोध होइत अछि जकरा देखब छुअब आ सुँघब सम्भव नहि अछि। मुदा ओकर भावक ज्ञान होइत अछि से भेल भाववाचक संज्ञा। जेना-लाली, ललिमा, नीलिमा, बुढ़ारी, सुन्दरता, वीरता, हीनता, गहराइ, लम्बाइ, मोटाइ आदि।

## सर्वनाम

जाहि शब्दक प्रयोग संज्ञाक बदला (स्थान) मे कयल जाइत अछि। ओहि शब्दकें सर्वनाम कहल जाइत अछि। जेना-विद्यापति महाकवि छथि ओ पुरुष परीक्षा लिखलनि। एहि वाक्यमे 'ओ' शब्द विद्यापति शब्दक बदलामे आयल अछि। तँ ओ सर्वनाम भेल।

सर्वनाम छओ प्रकारक होइत अछि-1. पुरुषवाचक, 2. प्रश्नवाचक, 3. सम्बन्ध वाचक, 4. निश्चयवाचक, 5. अनिश्चय वाचक आ 6. निजवाचक।

01. **पुरुषवाचक सर्वनाम**-जाहि सर्वनाम शब्दसँ पुरुषक बोध होइत अछि से भेल पुरुषवाचक सर्वनाम। जेना-हम, तौँ, ओ, इत्यादि।

पुरुष तीन प्रकारक होइत अछि-

(क) उत्तमपुरुष, (ख) मध्यम पुरुष, (ग) प्रथम पुरुष अथवा अन्य पुरुष।

(क) **उत्तमपुरुष सर्वनाम**-जे कहय से उत्तमपुरुष होइत अछि। जेना-हम रामायण पढ़ब। एहि वाक्यमे 'हम' कहयबला अछि। तँ 'हम' उत्तमपुरुष सर्वनाम कहबैत अछि।

(ख) **मध्यमपुरुष सर्वनाम**-जकरा कहल जाय से मध्यमपुरुष होइत अछि। जेना-तौँ घर जा, पढ़'। एतय 'तौँ', कँ घर जा कऽ पढ़बाक लेल कहल जा रहल छै। तँ 'तौँ' मध्यम पुरुष सर्वनाम भेल।

(ग) **प्रथम पुरुष अथवा अन्यपुरुष सर्वनाम**-जकरा सम्बन्धमे कहल जाय अन्यपुरुष सर्वनाम होइत अछि। जेना-ओ नीक काज करैत अछि तँ ओकर नाम सभ जानैत अछि। एहि वाक्यमे 'ओ' शब्दक प्रयोग ओहि व्यक्तिक लेल कयल गेल अछि जे नीक काज करैत अछि आ ओकर नाम सभ केओ जानैत छै। तँ 'ओ' अन्य पुरुष सर्वनाम भेल।

अन्यपुरुषकें प्रथमपुरुष सेहो कहल जाइत अछि। जते संज्ञा अछि सभ अन्यपुरुष होइत अछि।

02. **प्रश्नवाचक सर्वनाम**-जाहि सर्वनामसँ प्रश्नक बोध होइत अछि, ओ प्रश्नवाचक सर्वनाम होइत अछि। जेना-के गीत गाबि रहल अछि? एहि वाक्यमे 'के' प्रश्नवाचक सर्वनाम अछि।

03. **सम्बन्धवाचक सर्वनाम**-जाहि सर्वनामसँ सम्बन्धक बोध होइत अछि से भेल सम्बन्ध वाचक सर्वनाम। जेना-जकर काम तकर नाम। एहि वाक्यमे 'जकर' क सम्बन्ध कामसँ आ 'तकर' क सम्बन्ध नामसँ अछि। तँ एतय जकर आ तकर सम्बन्ध वाचक सर्वनाम भेल।

04. **निश्चयवाचक सर्वनाम**-जाहि सर्वनाम शब्दसँ निश्चित वस्तु, स्थान अथवा व्यक्तिक बोध होइत अछि ओ निश्चय वाचक सर्वनाम होइत अछि। जेना-ई पोथी जकर छै से लऽ जाड। एहि वाक्यमे 'ई' निश्चयवाचक सर्वनाम अछि।

05. अनिश्चयवाचक सर्वनाम-जाहि सर्वनामसँ अनिश्चितताक बोध होइत अछि से अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहबैत अछि। जेना-जतय सुविधा होयत ओतय रहब। एहि वाक्यमे 'जतय' आ 'ओतय' कोनो निश्चित स्थानकँ सूचित नहि करैत अछि। तँ ई दुनू अनिश्चयवाचक सर्वनाम भेल।

06. निजवाचक सर्वनाम-जाहि सर्वनामसँ निजक बोध होइत अछि से निजवाचक सर्वनाम होइत अछि। जेना-ओ अपनहि पत्र लिखलनि अछि। एहि वाक्यमे 'अपनहि' सँ स्वयं लिखनिहारेक बोध होइत अछि। तँ एतय 'अपनहि' निजवाचक सर्वनाम भेल।

संज्ञाक स्वरूप सभ कारकमे प्राय एके रहैत अछि मुदा सर्वनामक रूप बदलैत अछि। तदनुसार प्रत्येक सर्वनामक अछि। एहि वाक्यमे 'अपनहि' सँ स्वयं लिखनिहारेक बोध होइत अछि। तँ एतय 'अपनहि' निजवाचक सर्वनाम भेल।

संज्ञाक स्वरूप सभ कारकमे प्रायः एके रहैत अछि मुदा सर्वनामक रूप बदलैत रहैत अछि। तदनुसार प्रत्येक सर्वनामक अधिक-सँ-अधिक निम्नलिखित छओ रूप पाओल जाइत अछि-

|    |        |        |       |       |           |       |       |
|----|--------|--------|-------|-------|-----------|-------|-------|
| 1. | हम     | तौँ    | ई     | ओ     | के की कथी | जे    | से    |
| 2. | हमरा   | तोहरा  | हिनका | हुनका | कनिका     | जनिका | तनिका |
| 3. | -      | तोरा   | एकरा  | ओकरा  | ककरा      | जकरा  | तकरा  |
| 4. | (मोहि) | (तोहि) | एहि   | ओहि   | (काहि)    | जाहि  | ताहि  |
| 5. | हम-    | तोह-   | हिन-  | हुनु- | कनि-      | जनि-  | तनि-  |
| 6. | -      | तो-    | ए-    | ओ-    | क-        | ज-    | त-    |





## વિશેષણ

જાહિ શબ્દસં સંજ્ઞા અથવા સર્વનામક વિશેષતાક બોધ હોઈત અછિ સે વિશેષણ ખેલ। જેના-લાલ, પીઅર, લમ્બા, ચાકર, છોટ, પૈઘ, સુન્દર, ખરાબ, ઊંચ, નીચ, નીક, અધલાહ, ગોર, કારી આદિ।

વિશેષણ છઓ પ્રકારક હોઈત અછિ-1.ગુણવાચક, 2. સંખ્યાવાચક, 3. પરિણામવાચક, 4. નિશ્ચયવાચક, 5. અનિશ્ચયવાચક, 6. સાર્વનામિક।

01. ગુણવાચક વિશેષણ-જાહિ શબ્દસં સંજ્ઞા અથવા સર્વનામક રંગ, રૂપ, ગુણ, સ્થાન, કાલ આદિક બોધ હોઈત અછિ, ઓ સમ ગુણવાચક વિશેષણ હોઈત અછિ। જેના-કારી ગાય, ભદ્ર પુરુષ, નવ ગામ, પ્રાચીન યુગ આદિ।
02. સંખ્યાવાચક વિશેષણ-જાહિ શબ્દસં સંજ્ઞાક ગણના, ક્રમ, ગુના, આવૃત્તિ, સમૂહ આદિક બોધ હોઈત અછિ સે સંખ્યાવાચક વિશેષણ હોઈત અછિ। જેના-સાત આમ, પ્રથમ છાત્ર, ચારિ ગુના ધન, તીનૂ રાની આદિ।
03. નિશ્ચયવાચક વિશેષણ-જાહિ શબ્દસં નિશ્ચિત પદાર્થક બોધ હોઈત અછિ સે નિશ્ચયવાચક વિશેષણ કહૈત અછિ। જેના-એહન ઘર, ઇએહ સ્થાન, ઓહન રૂપ આદિ।
04. અનિશ્ચયવાચક વિશેષણ-જાહિ શબ્દસં અનિશ્ચિત પદાર્થક બોધ હોઈત અછિ ઓ અનિશ્ચય વાચક વિશેષણ હોઈત અછિ। જેના-કિછુ લોક, થોડ જલ, બહુત ધન આદિ।
05. પરિણામવાચક વિશેષણ-જાહિ શબ્દસં સંજ્ઞાક પરિણામ અથવા માત્રાક બોધ હોઈત અછિ સે પરિણામવાચક વિશેષણ કહૈત અછિ। જેના-ચારિ સેર ધાન, દૂ લીટર દૂધ, થોડેક ઘી, અધિક સોના આદિ।
06. સાર્વનામિક વિશેષણ-અનેકો સર્વનામ સંજ્ઞા શબ્દક પૂર્વ લાગિકઽ ઓકર વિશેષતાક બોધ કરૈત અછિ, એહન સમ સર્વનામ સાર્વનામિક વિશેષણ કહૈત અછિ। જેના-હમર પોથી, કકર ગામ, કોન લોક, જે સમય, જે આદમી આદિ।

વિશેષણક ત્રીન અવસ્થા હોઈત અછિ- (ક) મૂલાવસ્થા, (ખ) ઉત્તરાવસ્થા, (ગ) ઉત્તમાવસ્થા

(ક) મૂલાવસ્થા (POSITIVE)-જેં સંજ્ઞા પદક ગુણ મૂલ રૂપમે રહય તેં ઓ વિશેષણક મૂલાવસ્થા હોઈત અછિ। જેના-સુન્દર પુરુષ, પ્રિય લોક, અલ્પમત આદિ।

(ખ) ઉત્તરાવસ્થા (COMPARATIVE)- જેં દૂ સંજ્ઞાપદક ગુણક તુલના કયલ જાઈત અછિ તેં ઓ વિશેષણક ઉત્તરાવસ્થા હોઈત અછિ। એકરા વિશેષણક તુલનાત્મક અવસ્થા સેહો કહલ જાઈત અછિ। જેના-ખેલબસં પઢબ ગુરુતર કાજ અછિ। રામ શ્યામસં બેસી સુન્દર અછિ। એતય ગુરુતર શબ્દસં બોધ હોઈત અછિ જે ખેલબસં પઢબ બેસ કઠિન કાજ અછિ। કાજક કઠિનતાક તુલના ખેલ અછિ।

विशेषणक ई रूप विशेषण शब्दक पूर्व 'बेस' 'अधिक' अथवा बादमे 'तर' प्रत्यय लगाकऽ बनाओल जाइत अछि। जेना-सुन्दर, अधिक सुन्दर, बेस नीक तथा गुरु+तर=गुरुतर, सुन्दर+तर=सुन्दरतर, प्रिय+तर=प्रियतर आदि।

(ग) उत्तमावस्था (SUPERLATIVE)-जँ तीन वा तीनसँ अधिक संज्ञाक गुणसे तुलना कयल जाय आ ओहिमे सँ एकमे ओहि गुणक अधिकता देखायल जाय तँ ई विशेषणक उत्तमा अवस्था होइत अछि। जेना-मोहन अपन क्लासमे सबसँ बुद्धिमान् छात्र अछि। स्वार्थसाधन न्यूनतम काज अछि। एतय सबसँ 'अधिक आ' 'न्यूनतम' विशेषणक उत्तमावस्था अछि।

#### मूलावस्था

सुन्दर

पटु

गुरु

प्रिय

मृदु

अल्प

श्रेष्ठ

#### उत्तरावस्था

अधिक सुन्दर

कम सुन्दर

पटुतर

गुरुतर

प्रियतर

मृदुतर

अल्पतर

श्रेष्ठतर

#### उत्तमावस्था

सबसँ अधिक सुन्दर

सबसँ कम सुन्दर

पटुतम

गुरुतम

प्रियतम

मृदुतम

अल्पतम

श्रेष्ठतम



## क्रिया

ओ शब्द जाहिसँ कोनो काजक होयबाक अथवा करबाक बोध होइत अछि ओ क्रिया कहबैत अछि। जेना-खायब, पढ़ब, लिखब, चलब, हँसब, घुमब, सुतब, बैसब आदि।

क्रिया दू प्रकारक होइत अछि- (क) सकर्मक आ (ख) अकर्मक।

(क) **सकर्मक क्रिया**-जाहि क्रियाक फल (प्रभाव) कर्ता (क्रियाक कयनिहार) पर नहि पड़ि आन कोनो संज्ञापर पड़ैत अछि ओ सकर्मक क्रिया होइत अछि। जेना-गोविन्द पोथी पढ़ैत अछि। एतय 'पढ़ैत अछि' मे जे 'पढ़ब' क्रिया 'गोविन्द' करैत अछि ओकर फल कर्ता गोविन्द पर नहि पड़ि 'पोथी' पर पड़ैत अछि तँ 'पढ़ब' क्रिया सकर्मक भेल।

(ख) **अकर्मक क्रिया**-जाहि क्रियाक फल कर्तापर पड़ैत अछि ओ अकर्मक क्रिया होइत अछि। जेना-भोला हँसल। एहि वाक्यक 'हँसल' क्रियापदमे जे 'हँसब' क्रिया अछि ओकर फल कर्ता पर पड़ैत अछि, तँ 'हँसब' क्रिया अकर्मक क्रिया भेल।

## क्रियाक विशेष भेद

1. **प्रेरणार्थक क्रिया**-जाहि क्रियासँ एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिकँ काज करबाक लेल प्रेरित करैत अछि ओ प्रेरणार्थक क्रिया होइत अछि। जेना-मोहन सोहनसँ पत्र लिखबा रहल अछि। शिक्षक छात्रसँ पोथी पढ़बा रहल छथि। एतय 'लिखबा रहल अछि' 'पढ़बा रहल छथि' मे क्रमशः 'लिखबायब' आ 'पढ़बायब' प्रेरणार्थक अछि। किएक तऽ एहि वाक्यमे मोहन स्वयं नहि लिखि सोहनसँ लिखबैत अछि आ दोसर वाक्यमे शिक्षक छात्रसँ पढ़ाबैत छथि।
2. **पूर्व कालिक क्रिया**-जँ एकहि वाक्यमे दू क्रिया रहय तँ पूर्वक क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहबैत अछि। जेना-राजू पढ़िकऽ सुतल अछि। एहि वाक्यमे दू टा क्रिया अछि 'पढ़ब' आ 'सुतब'। एहि दुनूमे कर्ता 'राजू' पहिने पढ़ब क्रिया कयलक अछि आ बादमे सुतब। तँ एहिमे पहिल क्रिया पढ़ब (पढ़िकऽ) पूर्वकालिक क्रिया भेल।
3. **संयुक्त क्रिया**-जँ कोनो वाक्यमे दू अथवा दू सँ अधिक क्रिया एकहि अर्थक बोध कराबय तँ ओहि मिलल क्रियाकँ संयुक्त क्रिया कहल जाइत अछि। जेना-हम खा लेलहुँ। एहि वाक्यमे 'खायब' आ 'लेब' दुनू क्रिया मिलिकऽ एकहि अर्थ 'खायब' क बोधक अछि। तँ ई भेल संयुक्त क्रिया।

4. सहायक क्रिया-जे क्रिया वाक्यक प्रधान क्रियाक सहायता करय से सहायक क्रिया कहबैत अछि। जेना-‘सीता गीत गाबि रहलीह अछि।’ ‘श्याम पढ़ैत छल।’ एतय क्रमशः ‘गायब’ आ ‘पढ़ब’ प्रधान क्रियाक ‘अछि’ आ ‘छल’ क्रियाक काल (समय) बतेबामे सहायता-कऽ रहल अछि तँ ई दुनू सहायक क्रिया भेल।

| क्रिया सूची-सकर्मक | अकर्मक | प्रेरणार्थक   |
|--------------------|--------|---------------|
| पढ़ब               | हँसब   | पढ़ायब/हँसायब |
| पीयब               | चलब    | पीआयब/चलायब   |
| सुनब               | घुमब   | सुनायब/घुमायब |
| खायब               | बैसब   | खिलायब/बैसायब |
| हरब                | पड़ब   | हरबायब/पड़ायब |
| जानब               | जमब    | जनायब/जमबायब  |

नोट:- श्री युगेश्वर झा अपना व्याकरणमे क्रियाक विशेष भेदकरूपमे लिखलनि अछि-(1) विधि क्रिया (2) कामनात्मक क्रिया (3) प्रेरणार्थक क्रिया (4) पूर्व कालिक क्रिया (5) संयुक्त क्रिया (6) सहायिका क्रिया (7) तात्कालिक क्रिया (8) नामधातु (9) यौगिक क्रिया

विधिक्रिया-एहिसँ आज्ञा वा विनयक बोध होइछ-आयल जाय आ बैसू।

कामनात्मक क्रिया-जतऽ कामना प्रकट हो-अहाँ दीर्घायु होउ, ओ कुशल रहथि।

तात्कालिक क्रिया-एक क्रियाक सम्पादन होयबाक समय दोसर क्रिया हो तऽ पहिलुक क्रिया तात्कालिक क्रिया कहाओत, जेना-घंटी बजितहिं छात्र गाम विदा होइछ।

नामधातु-नाम (संज्ञा) अथवा विशेषणसँ ‘आएब’, ‘एव’ प्रत्यय जोड़िकऽ बनल क्रिया नामधातु कहाइछ-रामू बरदकँ खुटेसने अछि, पोथि हथियौने गेलाह।

यौगिक क्रिया तीन भेद होइछ-प्रेरणार्थक, संयुक्त आ नामधातु होइछ।



## काल

क्रियाक सम्पादनमे जे समय लगैत छैक ओकरा काल कहल जाइत छैक। जेना-दीपू पढ़ि लेलक। रामू पढ़ि रहल अछि। आ सोनू पढ़त। एतय एकहि 'पढ़ब' क्रियाकेँ तीन लोक द्वारा तीन समयमे होइबाक सूचना भेटैत अछि- 'पढ़ि लेलक' बीतल समयक, 'पढ़ि रहल अछि' सँ वर्तमान (उपस्थित) समयक आ 'पढ़त' सँ आबयबला समयक। इएह समय अछि-काल।

कालक तीन भेद अछि-भूत, वर्तमान आ भविष्यत्।

(क) **भूतकाल**-क्रिया सम्पादनक समय जँ बीत गेल रहैत अछि तँ ओ भूतकालक क्रिया होइत अछि। जेना-शम्भू स्कूल चलि गेल। मोहन रामायण पढ़ि लेलाह। सीता सुति रहलीह।

(ख) **वर्तमान काल**-जँ क्रिया सम्पादनक समय उपस्थित (वर्तमान) रहय तँ क्रिया वर्तमान कालक कहबैत अछि। जेना-अनिल घरमे पढ़ैत अछि। पूजारी पूजा करैत अछि। गोनूक गाय चरैत छनि।

(ग) **भविष्यत् काल**-क्रिया सम्पादनक समय आबयबला समय रहय तँ क्रियाक काल भविष्यत् होइत अछि। जेना-मोना घर जायत। गीता गीत गाओत।

**भूत कालक चारिटा उपभेद होइत अछि-**

- (1) सामान्य भूतकाल-सोहन गेल।
- (2) अपूर्ण भूतकाल-मोहन पढ़ैत छल।
- (3) पूर्ण भूतकाल-गौरव पोथी पढ़ि लेलाह।
- (4) तात्कालिक भूतकाल-राम पोथी पढ़ि रहल छलाह।

**वर्तमानो काल चारिटा उपभेद होइत अछि-**

- (1) सामान्य वर्तमानकाल-दिनेश पढ़ैछ। पारस पढ़ैत अछि।
- (2) अपूर्ण वर्तमानकाल-संजय जाइत अछि।
- (3) पूर्ण वर्तमानकाल-हम गीता पढ़ि नेने छी।
- (4) तात्कालिक वर्तमानकाल-नरेश गाम जा रहल अछि।

**भविष्यत् कालक तीन उपभेद होइत अछि-**

- (1) सामान्य भविष्यत्- सरिता गीत गाओत।

(2) अपूर्ण भविष्यत्- शारदा पानि पीबैत रहत।

(3) पूर्ण भविष्यत्-रीता पत्र लिखने रहत।

**कालभेदसँ क्रियाक रूप**

| <u>क्रिया</u> | <u>भूतकाल</u> | <u>वर्तमान काल</u> | <u>भविष्यत् काल</u> |
|---------------|---------------|--------------------|---------------------|
| पढ़ब          | पढ़ल          | पढ़ैत              | पढ़त                |
| लिखब          | लिखल          | लिखैत              | लिखत                |
| जायब          | गेल           | जाइत               | जायत                |
| सुनब          | सुनल          | सुनैत              | सुनत                |
| हँसब          | हँसल          | हँसैत              | हँसत                |
| खायब          | खायल          | खाइत               | खायत                |
| बैसब          | बैसल          | बैसैत              | बैसत                |
| नाचब          | नाचल          | नाचैत              | नाचत                |
| गायब          | गायल          | गाबैत              | गायत                |
| पीयब          | पीयल          | पीबैत              | पीयत                |
| चलब           | चलल           | चलैत               | चलत                 |



## अव्यय

जाहि शब्दक रूप लिंग, काल, कारक, पुरुष अथवा वचनक परिवर्तनसँ परिवर्तित (बदलैत) नहि होइत अछि अर्थात् ओकरामे कोनो विकार (अन्तर) नहि अबैत अछि ओ अव्ययक नामसँ जानल जाइत अछि। जेना-आइ, काल्हि, सदा, बहुत, अधिक आदि।

अव्ययक चारि भेद अछि-क्रियाविशेषण, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक, आ सम्बन्ध बोधक।

(क) **क्रियाविशेषण अव्यय**-जाहि अव्यय शब्दक प्रयोगसँ क्रिया विशेषण अथवा क्रिया विशेषणक अर्थमे विशेषता अबैत अछि ओ अव्यय शब्द क्रियाविशेषण अव्यय कहबैत अछि जेना- बसात बेस मन्द-मन्द बहैत अछि। एतय काल्हि, बड़ अधिक शब्द क्रमशः रवि (संज्ञा) खुश (विशेषण) मन्द-मन्द (क्रियाविशेषण) क विशेषता बतबैत अछि। तँ ई सभ क्रियाविशेषण अव्यय भेल।

क्रिया विशेषण अव्यय चारि प्रकारक होइत अछि-

(1) **कालवाचक-** (क) **समयवाचक**-आइ काल्हि, परसू, भोर, दुपहर, प्रातः, साँझ, पहिनेँ, तुरन्त, सदिखन, सदा, सर्वदा, एखन, जखन, तखन, कखन आदि।

(ख) **अवधिवाचक**-आइभरि काल्हिधरि, एखनधरि, वर्षभरि, दिनभरि, रातिधरि, निरन्तर, लगातार, कखनधरि, तखनधरि आदि।

(ग) **आवृत्तिबोधक**-नित्य, सबदिन, क्षण-क्षण, प्रतिदिन, प्रतिपल, पल-पल, राति-राति, दिन-दिन, घड़ी-घड़ी आदि।

(2) **स्थानवाचक-** (क) **स्थलवाचक**-एहिठाम, ओहिठाम, जाहिठाम, ताहिठाम, एतय, ओतय, जतय, ततय आदि।

(ख) **दिशावाचक**-आगू, पाछू, आगाँ, पाछाँ, भीतर, बाहर, ऊपर, नीचाँ, लग, दूर, समीप, कात-करोट, समीप, मध्य, माँझ, बीच, सबठाम, सर्वत्र, एतहि, ओतहि, जतहि, ततहि, एहिभाग, ओहिभाग आदि।

(3) **परिणामवाचक-** थोड़, बहुत, ढेर, अति, अत्यन्त, किछु, कतेक, कनेक, एतेक, ओतेक, जतेक, ततेक, यथाक्रम, यथाशक्ति, यथेष्ट, केवल, प्रायः इत्यादि।

(4) **भाववाचक-** ओना, एना, जेना, तेना, भने, नीके, ओहुना, एहुना, कहुना, जहिना, तहिना, जेना-तेना, एना-ओना, चुपचाप, अनेरे, सहसह, फड़फड़ क्रमशः सहसा, अचानक, अकस्मात्-शनैः शनैः आदि।



(ख) समुच्चयबोधक-

(अ) संयोगात्मक-ताँ, ओ, आ, अथच, तथा, एवं, जे-से, वरन्-बरु, जै-तै, हेतु, अतएव, अतः यद्यपि, यदि, तैयो, हि इत्यादि।

(ब) वियोगात्मक-किन्तु, परन्तु, परञ्च, वा, अथवा, कि, ताकि, नहि, तै इत्यादि।

(ग) विस्मयादि बोधक-

(अ) हर्षसूचक-वाह, बस, अहा, चाबस, अलबत्त, धन्य, पौबारह आदि।

(ब) विषाद सूचक-आः, ईः, उः, एः, ओः, हाय राम, राम, बाप-रे-बाप, रे बाप, दैव-रे-दैव आदि।

(स) आश्चर्य सूचक-अएँ, अहो, आः, ओः आदि।

(द) घृणासूचक-दुरछी, दुत, दुरजी, छीः-छीः, छिया-छिया, शिव-शिव आदि।

(घ) सम्बन्ध बोधक-

आगू, पाछू, पहिने, पूर्व, पास, पार, पूर्वक, उपरान्त, ऊपर, बाहर, बाद, बराबरि, बस, बदला, लगभग, नीचाँ, तर, सोझाँ, कात, दिशी, लग, खातिर, लेल, लेखे, सन, समान, सदृश, संग, समेत, सहित, लए, दए, दन इत्यादि।





## अनेक शब्दक लेल एक शब्द

1. अन्य देश-देशान्तर
2. अपन आत्मार्क हनन करयवला-आत्महंता
3. अवश्य भेनिहार-अवश्यम्भावी
4. अभिनय कयनिहारि-अभिनेत्री
5. अपना ऊपर निर्भर रहनिहार-आत्मनिर्भर
6. आकाशमे चलनिहार-खेचर, आकाशगामी
7. अपन इच्छासँ चलनिहार-स्वेच्छाचारी
8. अपना पएर पर ठाढ़ भेनिहार-स्वाबलम्बी
9. आँखिक पाछाँ-परोक्ष
10. आदरसँ युक्त-सादर
11. इच्छाक अधीन-ऐच्छिक
12. ईश्वरमे विश्वास कयनिहार-आस्तिक
13. ईश्वरमे विश्वास नहि कयनिहार-नास्तिक
14. जे उपकारकँ मोन राखय-कृतज्ञ
15. जे उपकारकँ नहि मानय-कृतघ्न
16. जा धरि जीवन अछि- आजीवन
17. जकर पति जीवित नहि छैक- विधवा
18. जकर बुद्धि कुशक नोक सन तेज हो- कुशाग्र बुद्धि
19. जकर तेज चल गेल हो- निस्तेज
20. जकर पति जीवित छैक- सधवा, अहिहव
21. जकरा कोनो वस्तुक विशेष ज्ञान हो- विशेषज्ञ
22. जकर दृष्टि दूर धरि जाय- दूरदर्शी

23. जकर प्रतिज्ञा दृढ़ हो-दृढ़ पतिज्ञ
24. जकर प्रतिआशा नहि हो-अप्रत्याशित
25. जकर निवारण कठिन हो-दुर्निवार
26. जकर वर्णन वचनसँ नहि भ' सकय-अनिर्वचनीय
27. जे लोभमे फसल हो- लोभग्रस्त
28. जे सहजहि पचि सकय- लघुपाकी
29. जे स्त्री कहियो सूर्य नहि देखने होअय- असूर्यम्पश्या
30. जे देरीसँ पचय-गुरुपाकी
31. पुत्रीक बेटा-दौहित्र, नाति
32. पुत्रीक बेटी- दौहित्री, नातिन
33. जे सहन नहि कयल जा सकय- असहनीय
34. जे संसार भरिक भरण-पोषण करैछ- विश्वम्भर
35. जे सभ ठाम व्याप्त हो- सर्वव्यापी
36. जे नहि भेनिहार हो-असंभव
37. जे नापल नहि जा सकय-अपरिमित
38. जे पहिने कहियो नहि भेल हो- अभूतपूर्व
39. जे अयलाह अछि- आगत
40. जकरा संतान नहि होइक- बाँझ
41. जे बढ़-चढ़ि क' कहल जाइक- अत्युक्ति
42. जे बेर-बेर कहल जाय-पुनरुक्ति
43. जे बहुत बाजय- वाचाल
44. जकर उपमा नहि हो- अनुपम
45. जकर पति विदेश गेल हो- प्रोषित पतिका
46. जकर स्त्री मरि गेल हो- विधुर
47. जे कम बाजय- मितभाषी
48. शाग खाय क' रहनिहार-शाकाहारी

49. पाँच तत्व सँ बनल-पंचभौतिक
50. समुद्रक आगि- बड़वानल
51. पातक बनल कुटी-पर्णकुटी
52. पत्नीक संग- सपत्नीक
53. वर्षाक अभाव- अनावृष्टि
54. जकरा पति त्यागि देने छैक-परित्यक्ता
55. जे विदेशमे रहैत अछि- विदेशी
56. भूख सँ व्याकुल-क्षुधातुर
57. पतिक छोट भाय- देओर
58. समधिक बेटा- समधौत
59. कुंज मे रहयवला- कुंजर, हाथी
60. देवताक चढ़ाओल गेल पदार्थ- प्रसाद
61. वनक आगि- दावानल
62. पेटक आगि- जठराग्नि
63. पृथ्वीकँ धारण कयनिहार- भूधर
64. जे सम्पत्ति पितासँ प्राप्त हो-पैत्रिक
65. जे स्त्रीक वसिभूत हो- स्त्रैण
66. छात्र केँ अध्ययन हेतु जे टाका भेटय- छात्रवृत्ति
67. जकर रूप विगड़ि गेल हो- विरूप
68. जे जीवलो पर मरले सदृश हो-जीवन्मृत
69. जकर अनुभव इन्द्रिय द्वारा नहि हो- अगोचर
70. जे चिरकाल सँ आबि रहल हो- चिरन्तन
71. जकरा लगले फुरि जाय-प्रत्युत्पन्नमतित्व
72. जकर शत्रु नहि जनमलैक अछि-अजातशत्रु
73. जकर शासन संसार भरि परसल हो-चक्रवर्ती

## पर्यायवाची शब्द

1. अमृत- अमिय, सुधा, पीयूष
2. आकाश- अम्बर, गगन, नभ
3. आँखि- चक्षु, लोचन, नेत्र, नयन, दृग
4. आगि- अग्नि, पावक, अनल
5. आम- आम्र, चूत, रसाल
6. कमल- नीरज, सगेज, पंकज, अरविन्द
7. घर- गृह, गेह, निकेतन, आलय, निलय
8. हाथी- कुंजर, हिमकर, सुधाकर
9. चन्द्रमा- सुधांशु, हिमकर, सुधाकर, शशि, विधु, इन्दु, कलानिधि
10. सूर्य- दिनकर, भानु, आदित्य, दिवाकर
11. जल- पानि, पय, सलिल, वारि, नीर
12. पृथ्वी- धरणी, पृथ्वी, भू, भूमि, धरा
13. फूल- पुष्प, सुमन, प्रसून, कुसुम
14. बड़द- वृष, वृषभ, सौरभेज
15. भ्रमर- अलि, द्विरेफ, भृंग, मधुकर, षटपद
16. मयूर- मोर, केकी, शिखी
17. असुर- दानव, दनुज, राक्षस, रजनीचर, निशाचर
18. जंगल- अरण्य, वन, विपिन, कानन
19. अपूर्व- अतुल, अद्वितीय, अनुपम
20. इन्द्र- देवराज, सुरपति, सुरेन्द्र, महेन्द्र, पुरन्दर
21. क्रोध- तामस, कोप, रोष
22. बेटी- घी, धीया, पुत्री, तनया, तनुजा
23. महादेव- कैलाशपति, गिरजापति, गौरीश, उमापति, दिगम्बर

24. बिजली- विद्युत, बिजली, चंचला, तडित, चपला
25. राति- रजनी, यामिनी, रैन
26. विष्णु- गोविन्द, लक्ष्मीश्वर, लक्ष्मीपति, वनमाली, माधव, लक्ष्मीकान्त
27. लक्ष्मी- रमा, कमला, हरिप्रिया, विष्णुप्रिया
28. समुद्र- जलधि, पयोधि, जलनिधि, उदधि, सागर, रत्नाकर
29. साँप- सर्प, फणि, भुजंग, अहि, पन्नग
30. गणेश- गणपति, गौरीसुत, गिरजानन्दन, गजानन, एकदन्त, मोदकप्रिय
31. गंगा- देवापगा, सुरसरि, गिपथगा, मन्दाकिनी, भागीरथी, जाह्नवी
32. चतुर- प्रवीण, पटु, होशियार, बुधियार
33. चाकर- खबास, नौकर, सेवक, भृत्य
34. दुःख- वेदना, व्यथा, संताप, क्लेश
35. नदी- सरिता, निर्झरिणी, अपगा
36. पत्नी- घरवाली, भार्या, स्त्री, दारा, धनि, सहधर्मिणी, गृहिणी, कलत्र, प्राणप्रिया, भामिनी, वल्लभा, वामांगी
37. वसात- हवा, समीर, मरूत, पवन, बात, वियार, अनिल
38. पर्वत- पहाड़, भूधर, भूमिधर, अचल
39. सरस्वती- वीणपाणी, शारदा, वागीश, वागेश्वरी, भारती
40. सिंह- केहरि, मृगेन्द्र, मृगराज
41. सुनर- रम्य, सुन्दर, कमनीय, रमणीक
42. पोखरि- सर, सरोवर, तालाब, तडाग



## विपरीतार्थक शब्द

कोनो शब्द आपसमें जखन प्रतिकूल अर्थ प्रकट करय तँ विपरीतार्थक शब्द कहबैछ। जेना-

अनुकूल-प्रतिकूल

अतिवृष्टि-अनावृष्टि

अंतरंग-बहिरंग

अनुराग-विराग

अनुलोम-प्रतिलोम

अल्पायु-दीर्घायु

अमर-मर्त्य

आरोह-अवरोह

आस्तीक-नास्तिक्

आदान-प्रदान

आगम-निगम

आकर्षण-विकर्षण

आहत-अनाहत

आगत-अनागत

आसक्त-अनासक्त

आत्मवादी-अनात्मवादी

आग्रह-दुराग्रह

आशावादी-निराशावादी

आयात-निर्यात

आभ्यांतरिक/आन्तरिक-बाह्य

इहलोक-परलोक

इच्छा-अनिच्छा

इष्ट-अनिष्ट

ईश-अनीश

उत्कर्ष-अपकर्ष

उदार-कृपण

उपकार-अपकार

उपचय-अपचय

उद्धत-अनुद्धत

उदय-अस्त

उपस्थिति-अनुपस्थिति

उन्मीलन-निमीलन

उद्यमी-निरुद्यमी

उपयोग-दुरुपयोग

उन्मूलन-आरोपण

उद्भव-विलय

उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण

ऊँच-नीच

ऊसर-उपजाऊ

एक-अनेक

एकमुखी-बहुमुखी

ऐक्य-अनैक्य

ऐश्वर्य-अनैश्वर्य

ऐहव-विधवा, राँड़



कम- बेसी  
 कल्पना-यथार्थ  
 कल्याण- अकल्याण  
 कंटक- निष्कंटक  
 कुटील- सरल  
 कृत्रिम- प्रकृत  
 कृश- पुष्ट  
 गरल-अमृत  
 गंगा-यमुना  
 गमन- आगमन  
 गद्य- पद्य  
 ग्रहण- त्याग  
 गुप्त- व्यक्त  
 गृही- संन्यासी  
 घरेया- बनैया  
 चर- अचर  
 चल- अचल  
 चंचल- स्थिर  
 चेतन- अचेतन  
 जाग्रत-सुषुप्त  
 जीवन- मरण  
 ज्योतिर्मय- तमोमय  
 जय- पराजय

कम- बेसी  
 कल्पना-यथार्थ  
 कल्याण- अकल्याण  
 कंटक- निष्कंटक  
 कुटील- सरल  
 कृत्रिम- प्रकृत  
 कृश- पुष्ट  
 गरल-अमृत  
 गंगा-यमुना  
 गमन- आगमन  
 गद्य- पद्य  
 ग्रहण- त्याग  
 गुप्त- व्यक्त  
 गृही- संन्यासी  
 घरेया- बनैया  
 चर- अचर  
 चल- अचल  
 चंचल- स्थिर  
 चेतन- अचेतन  
 जाग्रत-सुषुप्त  
 जीवन- मरण  
 ज्योतिर्मय- तमोमय  
 जय- पराजय

पति- पत्नी  
 परमार्थ- स्वार्थ  
 पंडित- मूर्ख  
 प्रवृत्ति- निवृत्ति  
 प्रमुख- सामान्य  
 प्रफुल्ल- म्लान  
 पक्ष- विपक्ष  
 पाप- पुण्य  
 पाश्चात्य- पूर्वात्य  
 प्राण- निष्प्राण  
 प्राची- प्रतीची  
 पालक- घातक  
 प्रभु- भृत्य  
 पुर:- पश्चात  
 प्रकाश-अंधकार  
 पूर्णता-अभाव  
 पूर्ववर्ती- परवर्ती  
 प्रासाद-पर्णकुटी  
 भोग- अभोग  
 मंगल-अमंगल  
 मुइनाई- जीनाई  
 मनुज- दनुज  
 तरल- ठोस

तीत-मधुर

दयालु- निर्दय

देव- दानव

दीर्घकाय- कृशकाय

दोष- निर्दोष

निर्माण- विनाश

नीक- बेजाय

राम- रावण

राजा- प्रजा

राग- द्वेष

लघु- वृहद्

संकोच- विस्तार

सरल- वक्र

सकाम- निष्काम

स्वाधीन- पराधीन

सुख- दुःख

सात्विक- तामसिक

संकीर्ण- विस्तृत

## संक्षेपण

कोनो देल गेल अवतरणक ओकर भावकेँ बिनु नष्ट कयने एक तिहाइ शब्दमे व्यक्त करब संक्षेपण थिक। मूल अवतरणक सार, क्रमबद्धता, संक्षिप्तता, स्पष्टता, शुद्धता आ सरल भाषा संक्षेपणक प्रमुख गुण होइत अछि। संक्षेपणमे देल गेल अवतरणक भावसँ सम्बद्ध एकटा शीर्षक देव आवश्यक अछि।

### उदाहरणस्वरूप

#### प्रारूप

शुद्ध हृदयसँ कयल गेल कार्य सदाचरण थिक। अपन श्रेष्ठता अथवा महत्त्वक प्रतिपादन हेतु कयल गेल कार्यक ओतेक महत्ता नहि भए सकैत अछि। कोनो सम्पत्तिशाली द्वारा देल गेल करोड़क दानसँ बेसी महत्त्व एक गरीब द्वारा देल गेल श्रद्धापूर्ण दानक अछि। सदाचरण आन्तरिक वस्तु थिक आ एकरा अभावमे पाण्डित्य सेहो ढोंग थिक। (50 शब्द)

## संक्षेपण

### शीर्षक-सदाचार

सदाचार आन्तरिक गुण थिक। अश्रद्धापूर्ण पैघ दानसँ श्रद्धापूर्ण तुच्छ दान महत्त्वपूर्ण होइछ। (17 शब्द)

### नीचाँ देल गेल अवतरणक संक्षेपण करू

(1)

हिमालयसँ कन्याकुमारी धरि पसरल हमरालोकनिक देश, आकार ओ आत्मा दुनू दृष्टिसँ महान ओ सुन्दर अछि। ओकर बाह्य सौन्दर्य विविधाक सामंजस्यपूर्ण स्थिति थिक आ आत्माक सौन्दर्य विविधतामे नुकायल एकताक अनुभूति थिक। भने कखनो नहि गलयवला हिमक प्राचीर हो, चाहे कखनो नहि जमयवला अनल समुद्र हो, चाहे किरणक रेखासँ खचित हरीतिमा हो, अथवा एकरस शून्यता ओढ़ने मरु हो, चाहे कारी-कारी घनगर मेघ हो, चाहे लंपटक साँस लैत अन्हर हो, सभ अपन भिन्नतोमे एके देवताक विग्रहक पूर्णता दैत अछि। जहिना मूर्तिक कोनो एक अंगक टूटि जायब सम्पूर्ण देव-विग्रहकेँ खंडित कय दैत अछि तहिना हमर सभक देशक अखंडताक हेतु विविधताक स्थिति अछि।

यदि एहि भौगोलिक विविधतामे व्याप्त सांस्कृतिक एकता नहि रहितय, तँ ई वन, पर्वत, नदी मात्र रहि जइतय। किन्तु एहि महादेशक प्रतिभा एकर अन्तरात्माकेँ एकरसमयतामे प्लावित कय एकरा एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कयलक अछि जाहिसँ ई आसमुद्र एक नामक परिधिमे बान्हल अछि।

(2)

जगद् विख्यात परम पावन मिथिला-भूमि मध्य जन्म ग्रहण कय हमरा सबहिक ई कर्तव्य नहि थिक जे जन्मभूमिक गौरवक रक्षा करी? हमरा सबहिक पूर्व पुरुष जाहि परम यत्न ओ असह्य परिश्रमसँ एहि भूमिक

यशो-राशिकेँ दिग्दिगन्त मध्य प्रकाशित कय हमरा लोकनिक हेतु एक अमूल्य संपत्ति छोड़ि गेलाह, की हमरा लोकनिक परम कर्तव्य ओ सर्वप्रथम उद्देश्य ई नहि होयबाक चाही जे हमरा लोकनि तादृश असीम कष्टसँ उपार्जित कीर्तिक अल्पतरो रक्षा करी ओ अपन पूर्व पुरुषक प्रतिज्ञाकेँ बढ़ावी आ अपनाकेँ हुनका लोकनिक योग्य संतान सिद्ध करी।

( 3 )

संतोष निरोगक लक्षण थिक, लोभ बीमारिक लक्षण थिक। जे मनुष्य संतुष्ट नहि होइत अछि ओकरा अधिक खोअयबाक प्रयोजन होइत अछि। ओकरा हेतु वैद्य केर प्रयोजन होइत अछि। एहेन व्यक्तिकेँ अधिक खोअयबाक अपेक्षा खायल पदार्थकेँ रद्द करयबाक प्रयोजन होइत अछि। कारण अनावश्यक वा आवश्यकतासँ बेसी पदार्थ पेटमे रहलासँ रोग होइत अछि। ओहि प्रकारेँ जकरा संतोष नहि अछि अर्थात् जे व्यक्ति प्रतिदिन अधिकारसँ अधिक धन एकट्ठा करबाक प्रयत्नमे लागल रहैत अछि, हुनका किछु देबाक अपेक्षा हुनकासँ किछु छीनि लेब उचित थिक। कारण जखन कोनो वस्तुक कमी भए जाइत अछि तँ मनुष्य बचल वस्तुसँ संतोष ग्रहण करै अछि। संतोष भेलासँ ओकरा सुख भेटैत छैक। संतोष नहि रहलासँ सुख नहि भेटैत छैक। लोभी व्यक्ति त्रिलोक संपत्ति पाबियोकेँ आओर पयबाक इच्छा करत।

( 4 )

सौभाग्यसँ आइ हमरा अपन देशक स्वरूप-निर्माण करबाक अवसर प्राप्त भेल अछि। जँ हम अपन उत्तरदायित्व नहि बुझी तँ हमर ई अक्षम्य अपराध होयत। सम्प्रति जे भारतक सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितिक अध्ययन करताह तनिका स्पष्ट देखि पड़ैतैन जे पाश्चात्य देशक भौतिकवादक भित्ति पर निर्मित सिद्धान्त सभक बाढ़िसँ ई पवित्र देश इतस्ततः ध्वस्त भय रहल अछि। एहि हेतु आवश्यक छैक जे प्राचीन भारतीय साहित्य अध्ययन करबाक सब प्रकारक सुविधा कयल जाय।

( 5 )

यंत्रयुग अपना आँचरमे अनेक सुख-सुविधा लय आयल। ओकरा संग मनुष्य अनेक सुख-स्वपन देखलक। मुदा यंत्रयुग एतहि नहि रुकल। सुन्दर फर्तिगाक रंग-विरंगक पौखिक संग रोग पसारयवाला सूक्ष्म कीटाणु पसारि जाइत अछि। यंत्रयुग सेहो अपन संग दुःखक बीजाणु पसारि रहल अछि। यंत्रयुगक एक हाथमे कैसर सन रोगक रामवाण औषधि अछि, तँ ओकर दोसर हाथमे लाखक लाख लोककेँ माटिमे मिला देमयवला ऐटमबम अछि। ओकरा एक हाथमे संरक्षणक आश्वासन अछि तँ दोसर हाथमे संहारक दाहकता अछि। वर्तमान युगक मानव सत्तरि महलवला मकान ठाढ़ करबाक चमत्कार देखा सकैत अछि मुदा एहि समाजमे सत्तरि हजार तेहन लोक अछि जकरा राति भरि माथा टेकबाक स्थान नहि भेटबाक कारण ओहि महलक सम्मुख फुटपाथ पर अनाथ नेनाक सदृश टाँग मोड़ि सूतय पड़ैत अछि, एहि तरहेँ वर्तमान युगमे परस्पर विरोधी जोड़ा हाथमे हाथ दय यात्रा कए रहल अछि।



## पत्र-लेखन

### 1. विद्यालयमे भेल पुरस्कार-वितरण-समारोहक संबंधमे मित्रकेँ पत्र लिखू।

इन्दिरा नगर, रोड नं.8

चिरैयाटाँड़, पटना

25.4.2013

प्रिय मोना

नमस्कार।

बहुतो दिनक उपरान्त तोहर पत्र भेटल। लागल जेना कोनो कृष्ण अपन सुदामाक स्मरण कयने होअए। हम विचारलहुँ, तोहर पत्रक जवाब देबामे किएकने अपन विद्यालयमे सम्पन्न पुरस्कार-वितरण-समारोहक संक्षिप्त जानकारी दऽ दी।

एहि बरख हमर विद्यालयक पुरस्कार-वितरण-समारोहक अवसर पर अपन राज्यक मुख्यमंत्री आयल छलाह। जे छात्रगण इम्तिहानमे पहिल आ दोसर स्थान पओने रहथि, हुनका पुरस्कार स्वरूप पोथी देल गेलनि। एकर अतिरिक्त दौग, साइकिल-रेसमे सेहो प्रथम-द्वितीय एनिहार छात्र लोकनिकेँ तगमा देल गेल। एहि उपलक्ष्यमे विविध मनोरंजन-कार्यक्रमो प्रस्तुत कएल गेल।

मोना! तौ तँ जनिते छै जे हम खेलकूदमे भाग नहि लैत छी। कहि नहि किएक खेलकूदक लाभ जनितो ओहि दिस आकृष्ट नहि भऽ पबैत छी। परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त करबा लेल हमरा पुरस्कार भेटल। एहि बेर हम बच्चनजीक एकटा गीत गओने छलहुँ। सभ गोटा हमर गायनपर मुग्ध भेल छलाह। मुख्यमंत्री महोदय अपन विशेष अनुदान-कोषसँ हमरा सय टाका देलनि। हम की कहियौ, जँ तौ ओहि कालमे रहितँ, तँ तौहिँ किछु-ने-किछु पुरस्कार अवश्ये दैतँ।

गामसँ की तोहर मन नहि उबिआइ छौक? एहि खेप पटना अएबें, तँ तोह एतुक्का रेडियो-स्टेशन देखेबौ।

पता :- मोना ठाकुर

तोहर अभिन्न

ग्राम-कनकपुर

सुधीर

पो.-लोहना, रोड

जिला-दरभंगा



## 2. ग्रीष्मावकाशक संबंधमे संगीकें पत्र लिखू।

कचहरी रोड, गया

26.4.2013

प्रिय रमेश

नमस्कार।

तोहर पत्र भेटल। तोहर इच्छा छै जे हम ग्रीष्मावकाश कोना बितओलहुँ, तकर विस्तृत जानकारी तोरा दीऔ। तौ तँ जनिते छै जे गया बिहारक जैकोबाबाद थिक। मइ-जूनक मासमे एहिठाम प्रचण्ड गर्मी पड़ैत छैक। दिन भरि गरम बसात करे झाँका विद्यमान रहैत छैक तोरा तँ बुझल छै जे हमर पिताक मासिक दरमाहा दू हजार टाका छनि। तँ कुलर, एसी, जेनेरेटर आदिक सुविधा नहि उठाय सकैत छी। हमर बन्न कोठली सएह हमरा लेल वातानुकूलित कक्ष थिक। सगर दिन गरमी आ उमससँ तंग रहैत छी। चाहैत छी जे दिन छोट भए जाए मुदा ओ सुरसाक मुह सदृश नमहरे भेल जाइत अछि।

राति भेलापर किछु आराम अवश्य भेटैए। छतपर जाए चन्द्रक शीतलताक पान करबामे बड़ आनन्द अबैत अछि। मुदा इहौ राति तँ खंजन चिड़ै सदृश फुरसँ वीति जाइत अछि। तौ कहबै जे अवकाशमे पोथी दिस आँखि गेल आकि नहि। एकदम नहि गेल, गर्मीसँ ततेक हरान रही जे पोथी दिस ध्याने नाँह जाए। भगवानक डांग एहन लागल जे नितान्त निर्धन परिवारमे जन्म लेलहुँ। सबटा मनोरथ कल्पने बनिकै रहि गेल। हँ, तखन आम खूब खेलियौ। जरदा, जरदालूसँ आरम्भ कए मालदह आ करपूरियाक स्वाद सेहो लेलहुँ।

जँ हमरा कविता लिखबाक लूँ रहितए तँ गर्मी सन शत्रुपर कड़गर प्रहार करिहँ। ओकरा अपन काव्यवाणसँ आहत कए दितहुँ।

आशा करैत छी जे तौ अपन ग्रीष्मावकाश नीक जकाँ बितओने हेबै।

पता :- रमेश झा

तिरहुत कॉलोनी

मधुबनी

तोहर संगी

राजकुमार

3. विद्यालय-शुल्क-मुक्ति लेल प्रधानाध्यापक नामें आवेदनपत्र लिखू।

सेवामे

प्रधानाध्यापक महोदय

पटना कॉलेजिएट स्कूल

दरियापुर गोला

पटना-1

महाशय,

सविनय निवेदन अछि जे हम अहाँक विद्यालयक एक अत्यन्त निर्धन छात्र थिकहुँ। हमर पिताजी विद्यालयमे चपरासीक काज करैत छथि। हुनका जे दरमाहा भेटैत छनि, से अहाँसँ नुकाएल नहि अछि। हमर परिवारमे कुल दस गोटा सदस्य छथि जिनिक भरण-पोषणक दायित्व हमर पिताजीक कान्ह पर छनि। दरमाहाक अतिरिक्त हुनक आयक कोनो स्रोत नहि छनि।

अतः अहाँसँ करबद्ध प्रार्थना अछि जे हमरा विद्यालय-शुल्कसद्वर पूर्णतः मुक्ति कए देल जाय। जाहिसँ हम अपन अध्ययन जारी राखि सकी। एहि लेल हमर रोम-रोम अहाँक आभारी रहत।

अहाँक आज्ञाकारी छात्र

26.4.13

पंकज कुमार ठाकुर

वर्ग-6, क्रमांक-4

4. छात्रावासमे रहबा लेल छात्रावास-अधीक्षककें आवेदनपत्र लिखू।

सेवामे

छात्रावास अधीक्षक महोदय

बाँकीपुर उच्च विद्यालय

पटना-1

महाशय,

निवेदन ई अछि जे हम अहाँक विद्यालयमे आठम वर्गक छात्र थिकहुँ। एखन धरि हम अपन पिताजीक संग रहैत छलहुँ। मुदा पिताजीक बदली दुमका भए गेल छनि। तँ हमरा आब छात्रावासमे रहए पड़त। हम



अपन पढ़ाई अहाँक विद्यालयमे करए चाहैत छी। अहाँक विद्यालय छोड़ि अन्यत्र जेबाक इच्छुक नहि छी। एकर कारण विद्यालयक सर्वोत्तम अध्ययन व्यवस्था अछि।

अतः श्रीमानसँ विनम्र अनुरोध अछि जे अपन विद्यालयक छात्रावासमे एक स्थान सुरक्षित करबाक कृपा कएल जाए।

27.4.13

अहाँक आज्ञाकारी छात्र

रूपेश झा

वर्ग-8, क्रमांक-6



### 5. नव पोथी किनक लेल पिताजीसँ टाकाक माँग संबंधी पत्र लिखू।

माध्यमिक विद्यालय,

पूर्णियाँ

27.4.2013

पूज्यवर पिताजी,

सादर प्रणाम।

अहाँ अपन पत्रमे लिखने छी, “हम तोरा एखन मात्र माहवारी खर्चा हेतु एक हजार टाका पठाए रहल छी। तौ नव पोथी कीनबाक लेल पाँच सय टाका माँग कएने छलौं। हमर विचार अछि जे एखन तौ पुराने किताबसँ काज चलाए लितें, एहि महगीमे आओर टाका खर्च करब ठीक नहि हएत।” हमरा अहाँक ई पत्र पढ़िकेँ बड़ दुख भेल। अहाँ एहन सम्पन्न आ शिक्षित अभिभावक एना लिखथि, तँ दुख आ आश्चर्यक अतिरिक्त आओर की भए सकैत अछि?

अहाँ जनैत छी, थोरैक उक्ति-‘पुरान कोट पहिरू आ नव पोथी कीनू।’ पुस्तकसँ बढ़ि आओर की धन भए सकैत अछि। पोथीकी मूल्य रत्नोसँ बेसी अछि। रत्न बाहरी चमक-दमक देखबैत छैक जखनकि पुस्तक अन्तःकारणकेँ उज्ज्वल करैत अछि। महात्मा गाँधी कहने छथि, “विचारक युद्धमे जखन पुस्तक रूपी अस्त्रे नहि रहत तँ काज कोना चलत?” मनकेँ स्वस्थ रखबा लेल नव-नव पोथीक उद्यान-भ्रमणक अतिरिक्त आर जगहे कतए अछि? मानव जाति जे किछु केलक-ए, विचारलक-ए आ पओलक-ए, ओ तँ सबटा पुस्तककेँ पृष्ठ सभमे सुरक्षित छै। गप्पी मित्र सभहिक सांग रहिकेँ गप्पमे कीमती समय नष्ट करबासँ नीक अछि जे पोथीक संग मित्रता कएल जाए। पोथी एहन संगी अछि जे कहियो विश्वासघात नहि कए सकैत अछि।

तैं अहाँसँ अनुरोध अछि जे अहाँ शीघ्रातिशीघ्र पाँच सौ टाका ऑन लाइनसँ हमर बचत खातामे पठाए दिअ। हेमनिमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक आत्मकथा प्रकाशित भेलैए। हमर मन ओहि पोथीकेँ कीबनाबक लेल लुसफुसा रहल अछि।

पता :- श्री मनमोहन झा

एम. आइ. जी. 246

कंकड़बाग

पटना-20

अहाँक आज्ञाकारी पुत्र

प्रशान्त वत्स



#### 6. विद्यालयक प्रथम दिनक अपन अनुभवक संबंधमे मित्रकेँ पत्र लिखू।

माध्यमिक विद्यालय

लोहरदंगा

28.4.2013

प्रिय सोनू,

नमस्कार।

तोहर पत्र भेटल। तौँ विद्यालयक पहिल दिनक अनुभवक संबंधमे बुझाए चाहैत छैं। तौँ जनैत छैं जे सातम कक्षा धरि पिताजी हमर पढ़ाइक व्यवस्था घरहिपर कए देने छलाह। हमर घरपर रहनिहार शिक्षक भोर-साँझ कने काल हमरा पढ़ाए दैत छलथि। ओ शिक्षक जकाँ नहि, जेठ भाए सदृश बुझाइत छथि। परिवारमे हम एसकर बेटा छलहुँ। तौँ पढ़बाक समय एसकरे रहैत रही। ने क्यो सहपाठी, ने क्यो संगी।

पहिल बेर जखन हमर नाम गामसँ चारि मीलक दूरी पर स्थित एहि विद्यालयमे लिखाओल गेल, तौँ पता लगाबए पड़ल जे हमर वर्ग कतए चलत। हमर विद्यालयक भवन बाँस जकाँ नमहर अछि। सभसँ पश्चिमे सातम वर्गक कोठली अछि। वर्गमे 15-20 बेंच पड़ल छल। अगुलका बेंचपर हम बैसि गेलहुँ। फेर अओरो छात्र सभ आएल। तीन-चारि गोटा हमर बेंचपर बैसल। वर्ग-शिक्षक रजिस्टर लएकेँ आएलाह। ओ क्रमांक कहब आरम्भ कएलन्हि-एक, दू, तीन! ई सब हमरा लेल नव छल। छात्र लोकनि हैं, 'यस सर'-ने कहि, की की कहैत रहए। हमरा समस्या भेल जे क्रमांक बजओलापर की बाजि उत्तर दी। हम डराइत-डराइत 'जी हैं' बजलहुँ। हाजिरी लेब जखन बन्न भेल, तौँ फेर ओ प्रत्येक छात्रसँ परिचय पूछलनि। परिचयक क्रममे जौँ कोनौ रोचक उत्तर होइत छल, तौँ किछु छात्र लोकनि हौंस दैत छलाह। शिक्षक महोदयकेँ कैक बेर 'शांत रहू', 'शांत रहू' कहए पड़नि। एक घंटी बीतल। दोसर घंटीमे दोसर शिक्षक

अएलाह, तेसर घंटीमे तेसर शिक्षक। क्यो अंग्रेजी पढ़ओलनि तँ क्यो हिन्दी, क्यो गणित पढ़ओलनि तँ क्यो कम्प्यूटरक शिक्षा देलनि चारि घंटीक बाद टिफिन भेल। आधा घंटाक टिफिनमे सबटा विद्यार्थी मैदानमे चलि आएल। सभ अपन-अपन रुचिक वस्तु खेलक। टिफिनक उपरान्त तीन घंटी अओरो चलल। चारि बजे छुट्टीक घंटी बाजल।

छुट्टी भेलापर हमरा एहन लागि रहल छल जे हम जहलसँ बहार भेलहुँ। एते काल-एते बेसी लोकसँ घेराएल रहबाक हमर ई पहिल अवसर छल। बन कोठलीमे एते छात्रक मध्य क्यो शिक्षक सभ छात्रपर कोना ध्यान दए पाओत! ई तँ अध्ययनक तपोवन नहि, अपितु ज्ञानक व्यापार-गृह अछि। कहि नहि, हमर मन एहि वातावरणमे कहिया धरि अपनाकँ समायोजित कए पाओब।

आर गप्प पाछाँ लिखबौ।

पता :- श्री सोनू कुमार झा

प्रसाद अपार्टमेन्ट

संजय नगर, पटना-20

तोहर

मुन्ना



## 7. दर्शनीय स्थलक विषयमे छोट भाएकँ पत्र लिखू।

खर्जाची रोड,

पटना-4

28.4.2013

प्रिय विनोद,

शुभाशीष।

आइ हम आगरासँ घुरलहुँ अछि। एहि बेर हम अपन विद्यालयक शिक्षक एवं छात्रक संग पूजावकाशमे घूमए निकलि गेल छलहुँ। आगरामे अनेक स्थान ऐतिहासिक महत्त्वक अछि, जेना-किला, ताजमहल आदि। ताजमहलक प्रशंसा की करब! ई श्रीकृष्णक कमनीय क्रीड़ाक साक्षी यमुनाक तटपर ठाढ़ अछि। एकरा मुगल शहंशाह शाहजहाँ अपन बेगम मुमताजक स्मृतिमे बनबौने रहथि। एल्डअस हक्सले ताजक रूप-रंगक अनुपात-भंगक आलोचना कएने रहए, से हम कहिओ पढ़ने रही। साहिर लुधियानवीक ओ नज़्म सेहो हम पढ़लहुँ अछि जाहिमे ओ ताजक प्रसंग लिखने छथि, 'एकटा शहंशाहक सम्पत्तिक सहारा लएकँ, हम गामक सिनेहक हँसी कटौलहुँ अछि।' किन्तु, एकरा देखि उक्त सप्त गप्प निरर्थक लगैत अछि।

ताजक विषयमे की कहियौ? संसारमे सात आश्चर्यक गप्प के कहए, जँ दू-तीन आयश्चर्य सेहो होइत, तँ ओहिमे सेहो ई सहजहीं शामिल कएल जाए सकैत छल। ताज! कालक गाल पर टधरल नोरक दू बून्! ई, ई तँ संगमरमरपर अंकित सनातन नारीक प्रति सनातन पुरुषक प्रेम-कविता थिक। इजोरिया रातिमे ई अओरो आकर्षक बुझाईत अछि। जेना मुमताज स्वयं शहजहाँसँ भेट करक लेल साज-शृंगार कए बहराए गेल होअए।

एहि कार्डमे अओर की लिखिओ? भेट भेलापर आर गप्प कहबौ। मार्के प्रणाम कहि दिहौ  
पिताजी मुम्बई कृषि-प्रदर्शनी देखि कहिया धरि घुस्थुन?

पता :- विनोद झा

तोहर अपन

ग्राम-उजान

अशोक कुमार .

पो.-लोहना रोड

जिला-दरभंगा



#### 8. परीक्षाक बाद सहपाठी लोकनिक संग पर्यटनक अनुमति एवं टाका लेल जेठ भाएकेँ पत्र लिखू।

माध्यमिक विद्यालय,

गोपालगंज

27.4.2013

परमादरणीय भैया,

सादर प्रणाम।

वार्षिक परीक्षाक आइ परीक्षाफल सुनाओल गेल। हम अपन वर्गमे सर्वप्रथम अएलहुँ-ई जानि अहाँकेँ प्रसन्नता हएत। हम एहि बरख दसम वर्गमे जाएब। एखन धरि हम इनार महक बेंग बनल रही। जखन-जखन विद्यालयसँ ट्रिप जाइत छल, अहाँ ओहिमे सम्मिलित हेबाक हमरा कहियो अनुमति नहि देलहुँ।

अहाँ तँ जनिते छिएक, पुस्तकीय ज्ञाने सबकिछु नहि थिक। जावत् धरि हम विभिन्न स्थानकेँ अपन आँखिसँ नहि देखैत छी, तावत् धरि ओ ज्ञान अधूरा रहि जाइत अछि। पर्यटन दुआरा हम मात्र प्राकृतिक खूबज पृष्ठकेँ नहि देखैत छी, अपितु मानवीय कला-कौशल एवं वैज्ञानिक चमत्कारक अनगिनत दृश्य सेहो देखैत छी। एहि

बेर हम प्रधानाध्यापक महोदयक इच्छा छनि जे हमरा लोकनि अपन देशक सजधानी दिल्लीक यात्रा करी। दिल्ली जे कहियो हस्तिनापुर नामसँ पांडव एवं कौरव लोकनिक गौरव-गाथा गबैत छल, आइ ओ 'रेशमी 'नगरी' भए संसारक विभिन्न देशक संगम-सेतु बनि गेल अछि। ओ हमरा अपना दिस घीचि रहल अछि।

हमरा आशे नहि, अपितु पूर्ण विश्वास अछि जे अहाँ एहि पर्यटनमे सम्मिलित हेबाक आज्ञा देब तथा अतिशीघ्र दू सै टाका ऑन लाइनक माध्यमसँ हमर बचत खातामे पठाए देब।

पता :- श्री रामयश सिंह

अहाँक अनुज

प्राचार्य, विपिन माध्यमिक विद्यालय

निरंजन

पूर्णियाँ



## 9. खाद्य वस्तु एवं गरम कपड़ा भेजबाक हेतु पत्र लिखू।

आर्यकन्या विद्यालय, पटना

25.4.2013

पूजनीया मा,

सादर प्रणाम।

हम सकुशल छी। हमर पढ़ाई ठीक चलि रहल अछि। हँ, किछु वस्तुक प्रयोजन अछि। अहाँ कृपा कय रामूक मार्फत पठाय देब। हमर छात्रावासमे जलखइमे दुनू साँझ हलुआ देल जाइत अछि। डालडामे निर्मित हलुआसँ पेट गड़बड़ रहैए। तँ अहाँ ठकुआ आ नमकीन बनाकेँ पठाए देब। अहाँक हाथक प्रेमपूर्वक बनाओल गेल वस्तुमे जे स्वाद होइत अछि, से एहि बाबाजी सभ दुआरा मात्र टाका एँठबा लेल बनाओल वस्तुमे कतए! भए सकए तँ आदी आ किसमिसक कनेक अचार सेहो पठाए दिहँ। एकटा चीज आर। जाड़क मास आबि रहल छै। तँ दीदीसँ हमरा लेल कार्डिगन बिनवाकेँ पठाए देब।

बाबूजी आ दीदीकेँ प्रणाम। मुन्नुकेँ दुलार।

पता :- श्रीमती शकुन्तला सिंह

अहाँक दुलारि बेटी

प्रधानाध्यापिका,

सुधीरा

मिडिल स्कूल, नरुआर

मधुबनी



## 10. परीक्षाक सफलतापर भित्रकें पत्र लिखू।

बेगूसराय

25.4.2013

प्रियं वशिष्ठ,

नमस्कार।

अजुका दैनिक हिन्दुस्तानमें तोहर परीक्षाफल देखलियौ। तौ बिहार माध्यमिक विद्यालय परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त केलौ। एहि स्वर्णिम सफलताक अवसरपर हमर हार्दिक शुभकामना। नेतरहाट विद्यालयक तौ गौरव बढ़वे कएलेहैं, संगे-संगे हमरा लोकनिकें सेहो गौरवान्वित केलेहैं।

आशा करैत छी, तौ एहि प्रकारें पटनाक विज्ञान महाविद्यालयमे नामांकन कराकें ओतुक्का इम्तिहानमे सेहो कीर्तिमान स्थापित करैत रहबौ। हमर अग्रिम आन्तरिक शुभकामना तोहर मार्ग प्रशस्त करतौ, एहन प्रार्थना हम भगवानसँ करैत छी।

पता :- श्री विशिष्ट सिंह

आदर्श निकेतन,

श्रीकृष्ण पथ, बक्सर

तोहर अभिन

राजीव



## 11. अपन लक्ष्यक विषयमे पिताकें पत्र लिखू।

बी० बी० कॉलेजिएट

बेगूसराय

28.4.2013

पूज्यवर पिताजी,

सादर प्रणाम।

एखनहि अहाँक पत्र प्राप्त भेलय। हम दसम वर्गमे नाम लिखबा लेलहुहैं। अहाँ हमर लक्ष्यक विषयमे जिज्ञासा कएने छी।

जे गप्प हम अहाँसँ कहए चाहैत रही, से अहीं हमरासँ पूछि लेलहुँ। अहाँ सोचैत हेबैक जे पढ़िकें

हम डॉक्टर वा इंजीनियर बनब आ टाकाक ढेर लगाए देब। मुदा, अहाँसँ अपन मनक गप्प कहि रहल छी। हम ने तँ इंजीनियर बनबक इच्छुक छी आ ने डॉक्टरे। हम त' एकटा साधारण सिपाही बनए चाहैत छी। देशक सिपाही! भारतमाताक सिपाही!

अहाँ कहब, सिपाहीक जिनगी त' संगीनक नोकपर टिकल होइत छैक। कखन क्यो बेरहमी गोलीसँ ओकर छाती केँ बेरहम छलनी कए जाएत, एकर कोनो निश्चय नहि। परञ्च, सत्य मानू पिताजी, जाहि धरती पर हम जन्म लेलहुँ, जकर कोरमे खेला-खेला हम पैघ भेलहुँ, तैसँ उन्नत कोना भए सकैत छी? सिपाही लोकनिक जीवन दुखक दर्दनाक कथा अवश्य छै। मुदा, जँ ओ नहि रहथि, तँ राष्ट्रमे खुशीक क्षण आबि पाओत? हुनका अपन देश लेल मरबामे जे आनन्द भेटैत छनि से आर कतए भेटत? आइ भारतमाता अपन एहन वीर युवक पुत्रकेँ-सिपाही लोकनिकेँ सोर पाड़ि रहल छथि, जे माथमे कफन बान्हि देशहित हेतु आपनाकेँ समर्पित करबा लेल तैयार होथि। पिताजी! एहन अवसर हम हाथसँ छोड़ए नहि चाहैत छी।

हम अपन अन्तःकरणक गप्प निवेदित कए देलहुँ। आब अहाँ हमरा शुभाशीष देब जे हम अपन जिनगीमे एकटा कार्यान्वित कए सकी। माकेँ प्रणाम एवं टुनटुनकेँ प्रेम।

पता :- श्री विष्णुदेव कुमार,

अहाँक अज्ञाकारी बेटा

ग्रा.-मनिअप्पा

विनय

पो.-मनिअप्पा

जिला-बेगूसराय

